ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—24/02/2021 वीर शिवाजी

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>

अब शिवाजी बीजापुर का राज्य छोड़ मुगल साम्राज्य के भीतर आक्रमण करने लगे। शिवाजी के सैनिकों ने मुगल सैनिकों का धारण करके शामस्ता खाँ के निवास स्थान में प्रवेश किया, उसके सैनिकों को पराजित किया। शामस्ता खाँ का पुत्र मारा गया। और वह भाग गया। भागने से उसके हाथ की उँगलियाँ कट गयी औरंगजेब उससे बहुत रुष्ट हुआ और उसे दक्षिण से हटा लिया। शवाजी का काम चलता रहा। अंत में, औरंगजेब ने एक बड़ी सेना भेजी जिसमें जयसिंह भी थे। शिवाजी ने उस समय संघि कर लेना ही उचित समझा और औरंगजेब के दरबार में जाना स्वीकार कर लिया। औरंगजेब ने इनका उचित सम्मान नहीं किया और बंदी बना लिया लेकिन वहाँ इन्होंने अस्वस्थता का बहना किया और रोग के निवारणार्थ नित्य मिठाई बाँटी जाने लगी। उसी मिठाई की टोकरी में बैठकर एक दिन वह वहां से भाग गए। मथुरा, प्रयाग, काशी, गया होते हुए वे पूना पहुँचे।

सन् 1674 ई० में, रायगढ़ में इन्होंने राजा की पदवी धारण की और बड़े धूम-धाम से यह समारोह संपन्न हुआ। काशी से भागा भट गए थे जिन्होंने इनका यज्ञोपवीत कराया। इसके पश्चात् इन्होंने सुदूर दक्षिण तक अपने राज्य का विस्तार किया।

शिवाजी आजकल की दृष्टि से पढ़े-लिखे न थे। पुस्तकों का ज्ञान उन्हें नहीं था। किसी पाठशाला में उन्होंने अध्ययन नहीं किया था किंतु उन्हें ज्ञान पर्याप्त था। पंडितों तथा विद्वानों का बहुत सम्मान करते थे। हिंदी के विख्यात कवि भूषण इनके दरबार में रहते थे। भूषण घर से रुष्ट होकर भाग गए थे। शिवाजी की ख्याति सुनकर दक्षिण चले गए। शिवाजी एक मंदिर में ठहरे थे। वहीं शिवाजी से इनकी भेंट हुई। शिवाजी ने इनसे परिचय पूछा तो इन्होंने कहा, "मैं कवि हूँ। महाराज शिवाजी के दरबार में जा रहा हूँ।" शिवाजी ने कहा, “वहाँ क्या सुनाइएगा, कुछ मैं भी सुनँ।" भूषण एक के बाद एक छंद सुनाने लगे। बावन कवि सुनाने के पश्चात् चुप हो गए।शिवाजी ने कहा, "और सुनाइए।" भूषण ने कहा, "सब तुम्हीं को सुनाएँ, अब नहीं सुनाऊँगा।" शिवाजी ने
~~~~~~~~~~

तब अपना परिचय दिया और कहा जाता है कि बावन छंदों पर बावन लाख रुपए, बावन गाँव और बावन हाथी पुरस्कार में दिए।

शिवाजी हिंदू धर्म के दृढ़ अनुयायी थे, किंतु दूसरे धर्मों के प्रति अतीव उदार थे। यह गुण उस युग के विरले लोगों में पाया जाता विजय के अवसर पर कहीं कुरान की पोथी मिल जाती थी तो बड़े सम्मान से उसे रखते थे और अपने किसी मुसलमान कर्मचारी अथवा मौलवी को देते थे। उनकी कठोर आज्ञा थी कि कोई सैनिक मसजिद को हानि न पहुँचाए, महिलाओं का आदर किया जाए। उनकी सेना में मुसलमान कर्मचारी भी थे। वे अपनी जन्मभूमि स्वतंत्र कराना चाहते थे किंतु किसी धर्म या जाति से उनको किसी प्रकार का द्वेष नहीं था।

शिवाजी बहुत अच्छे सैनिक और सेनानी थे। जिस प्रकार वह लड़ाइयों का संचालन करते थे और उसकी योजना बनाते थे, उसकी प्रशंसा यूरोप के युद्ध विद्या के पंडितों ने की है।

शिवाजी को सदा उत्साहित करने वाले तथा उनके विचारों को ऊँचा बनाने वाले उनके गुरु थे, रामदास। जिस प्रकार शैशव में उनकी माता ने तथा लड़कपन में दादा जी कोंणदेव ने शिक्षा से उन्हें उत्साहित किया, उसी प्रकार यौवन में समर्थ गुरु रामदास ने उनके हृदय को अपनी ऊँची शिक्षा से देशप्रेम के भावों से भर दिया।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी "कुसुम"